i.kkd&100

vad&foHkktu

1. ikBîiLrd 40
2. lLÑr lkfgR; dk bfrgkl 20

   (क) चारों वेद तथा प्रमुख उपनिषद् (सामान्य परिचय), रामायण, महाभारत, गीता।

   (ख) संस्कृत साहित्य परिचय–कवि, नाटककार, पद्य, गद्य–नाटक।
3. NUn 10
4. vyadkj 10
5. lekl 5
6. lLÑr d y?kwkD;k e dkjdk dk i;kx 5
7. lLÑr y[ku] y?k fucU/k 10

   (क) ikBîk'k & निर्धारित पाठ्यपुस्तक 40

   (परीक्षा में इन्हीं अंशों से सरलार्थ, सप्रसंग–व्याख्या, कथासारांश, प्रश्नोत्तर आदि पूछे जाएंगे)।

   fu/kkfjr ikBîiLrd: कक्षा 12 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *संस्कृत पाठ्य पुस्तक।*

   (ख) lLÑr lkfgR; dk bfrgkl 20

   चारों वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता का परिचयात्मक ज्ञान। गद्यकाव्यों एवं नाटकों का परिचयात्मक ज्ञान।

   fu/kkfjr ikBîiLrd: एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *'संस्कृत साहित्य परिचय'* (संशोधित संस्करण)।

   (ग) NUn 10

   (लघु, गुरु, गण, यति का प्रयोगात्मक ज्ञान)।

   अनुष्टुप् इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, शार्दूलविक्रीडित, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता।

   (सभी छन्दों का संस्कृत में लक्षण देकर सोदाहरण लघु, गुरु, मात्रा लगाकर स्पष्ट करना)

   (ग) NUn 10

   (घ) vyadkj 10

   अनुप्रास, उपमा, यमक, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, अतिशयोक्ति, व्याजस्तुति और अन्योक्ति।

   (अलंकारों की परिभाषा देकर सोदाहरण परिचय)

   (ङ) lekl: (सभी समासों का सामान्य परिचय) 5

   अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व, द्विगु, बहुव्रीहि।

   (i) समस्तपदों का विग्रह, विग्रह किए गए पदों का समस्तपद बनाना।

   (ii) समासों के नाम से परिचित कराना।

(च) **y?k okD;k e dkjdk dk i;kx** 5

(i) कारकों का नियमानुसार वाक्यों में प्रयोग करना।

(ii) उपपद विभक्तियों का वाक्यों में प्रयोग।

निर्धारित पाठ्ययपुस्तक: छन्द, अलंकार, समास और कारक के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *व्याकरण सौरभम्* (संशोधित संस्करण)।

(छ) **lLÑr&y[ku** (लघु निबन्ध) (10–15 वाक्य) 10

विषय–

(i) विद्यार्थी के दैनिक जीवन से सम्बन्धित।

(ii) संस्कृत तथा मानवमूल्यों पर आधारित।

(iii) वार्षिकोत्सव, पुस्तकालय, महापुरुष–जीवन–वृत्तांतादि।

(iv) संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों (रामायण, महाभारत, गीतादि) तथा ग्रन्थकारों (वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि आदि) से सम्बन्धित।

(v) पर्यावरण से सम्बन्धित विषयों पर।

(vi) सामाजिक समता, नवीन समाज चेतना।

(vii) राष्ट्रीय गतिविधियों पर आधारित।

f'k{k.k&fof/k ,o rduhd

इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अध्यापक छात्रकेन्द्रित एवं क्रियात्मक विधि का आश्रयण करेंगे जिससे विद्यार्थियों में अपेक्षित भाषा कौशलों (श्रवण, भाषण, पठन, लेखन एवं चिंतन) का समुचित विकास हो सके। साथ ही उनमें संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं के रसास्वादन की क्षमता विकसित हो सके। अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में संस्कृत भाषा का अधिकाधिक व्यवहार वांछनीय है।

d{kk&fØ;kdyki

संस्कृत–शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से निम्नलिखित कक्षा–क्रियाकलाप सुझाए जाते हैं, जो अध्यापकों के निदर्शन मात्र के लिए हैं :

- पद्य पाठों को पढ़ाते समय अध्यापक उनका सस्वर एवं शुद्ध वाचन करें तथा विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएं (व्यक्तिगत एवं सामूहिक)
- नाट्यांश के पाठों का यथासंभव अभिनय द्वारा अध्यापन को रोचक बनाया जाए
- गद्य पाठों का शुद्ध एवं विद्यार्थियों द्वारा अनुवाचन कराना अपेक्षित है, जिसमें वे उचित गतिपूर्वक किसी भी गद्यांश को पढ़ सके तथा पठित शब्दों का आत्मविश्वास के साथ प्रयोग कर सकें।